दतिया जिले की सेवढ़ा तहसील में प्राप्त पाण्डुलिपियों का अध्ययन

*प्रो. आशाराम शर्मा
** डॉ. (श्रीमती) कमलेश माथुर

शोध पत्र-संस्कृत

साहित्यानुराग न तो किसी समयावधि में अनुबंधित रहता है और न ही किसी व्यक्ति विशेष की धरोहर होती है । साहित्यानुराग की परम्परा एक बार स्थायी हो जाने पर पीढ़ियों तक चलती है और उसके अन्तर्गत अमूल्य और अकूति सामग्री एकत्रित होती चली जाती है । इस तरह साहित्यानुराग के ये विशिष्ट केन्द्र उस समूचे समाज और काल खण्ड पर सदियों बाद भी ऐसा प्रकाश पुंज फैलाने में समर्थ होते हैं कि इनके आश्रय से ''बीता हुआ'' सब कुछ जगमगाने लगता है। सेवढ़ा जिला दतिया का तहसील मुख्यालय है। प्रकृति ने इसे सिन्ध नदी का पावन तट दिया है । आस पास मनोहारी पहाडियॉं और जंगल हैं । पुराण प्रसिद्ध धार्मिक परम्पराऐं इसे उत्तराधिकार में मिली हैं । ब्रह्मा के मानस पुत्रों की यह तपस्थली आज भी '' सनकुआ '' के कारण जन आस्था का केन्द्र बनी हुयी है । संस्कृत पाण्डुलिपियों की खोजबीन के समय पं. राधारमण झारखड़िया के पूर्वजों का बहुमूल्य संग्रह हाथ लगा । झारखड़िया वंश में संस्कृत साहित्यानुराग की पीढ़ियों पुरानी परम्परा है । उनके संग्रह में ५० के लगभग संस्कृत हस्त लिखित ग्रन्थ देखने को मिले जिनमें से ३४ ठीक हालत में हैं। संस्कृत व्याकरण के हस्त लिखित ग्रन्थ शोध की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं । सिद्धान्त चन्द्रिका , कारक विलास , संस्कृत रत्नावली आदि नाम उल्लेखनीय है । कारक विलास में कारकों के अष्टाध्यायी के सूत्रों को अत्यन्त सरल एवम् हृदय ग्राही भाषा में नई तरह से प्रस्तुत किया गया है।

ज्योतिष के ग्रंथों में ग्रह लाघव , स्वरोदय प्रश्न तथा जातकालंकार जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं तो शीघ्रवोध और मुहूर्त चिन्तामणि की हस्तलिखित प्रतियॉं भी दृष्टव्य हैं। व्याकरण और ज्योतिष जैसे शुष्क विषयों के साथ ही सरस साहित्यिक रचनाओं में रघुवंश महाकाव्य , भामिनी विलास एवं श्रंगार शतक उल्लेखनीय हैं। तीनों ही ग्रंथ श्रंगार रस प्रधान होने के कारण श्रेष्ट एवं जनप्रिय माने जाते हैं। आयुर्वेद के ग्रन्थों में वैद्य जीवन नामक ७५ पत्रों का एक महत्वपूर्ण हस्त लिखित ग्रन्थ है। इसमें रोगों की उत्पत्ति के कारण , निवारण तथा स्वास्थ्य के अन्य सिद्धांतों का विवेचन किया गया है। नवगत एक महत्वपूर्ण हस्त लिखित ग्रन्थ है इसमें ४८ पत्र हैं इसका समय १८४२ है। देवताओं की स्तुतियॉं एवं कथाऐं , मन्त्रों में काली कवच , काली शतनाम स्तोत्र , शिव शतनाम स्तोत्र , सौन्दर्य लहरी स्तोत्र , इन्द्राणी स्तोत्र , हरतालिका व्रत कथा तथा पं. जगन्नाथ कृत ''गंगा लहरी'' महत्वपूर्ण है। झारखड़िया परिवार का वंशवृक्ष इस प्रकार प्राप्त होता है -उपलब्ध वंशवृक्ष के आधार पर पाण्डुलिपियों की पुष्पिकाऐं इस परिवार के संस्कृतानुराग का स्वयं साक्ष्य निम्नप्रकार देतीं हैं ।

१. मुहूर्त चिन्मामणि , इसमें ५४ पत्र हैं , अपूर्ण हैं। अन्त में लिखा है - ''पं. भवानी शंकर झारखड़िया लिखित संवत् १८६३ श्व पठनार्थ''
२. सिद्धान्त चन्द्रिका , रामचन्द्राश्रमाचार्य विरचित, ६३ पत्र हैं पुस्तक पूर्ण है , अन्त में लिखा है ''पं. भवानी प्रसाद झारखड़िया लिखित श्व पठनार्थ संवत् १८६४''
३. सौन्दर्य लहरी स्तोत्र , शंकराचार्य विरचित, ३१ पत्र हैं , पुस्तक पूर्ण हैं , पुष्पिका में लिखा है ''पोथी लली झारखड़िया की, संवत् १९१५''
४. नवगत , पुस्तक पूर्ण है ४८ पत्र हैं , पुष्पिका में लिखा है '' इंति नवगत समाप्तः लिखतं झारखड़िया सांउले जू पौष वदी शनौ संवत् १८४२''
५. सा० स्व० (सारस्वती प्रक्रिया) पूर्ण है १२६ पत्र हैं, अन्त में लिखा है '' इंति श्रीमत्परमहंस परिब्राजकानुभूति स्वनूपाचार्य विरचित सारस्वती प्रक्रिया समाप्त , वर्षे आषाड़ शुक्ल तृतीया शनि वासरे पं०श्री लाल सांमले (साउले) पाठनार्थे संवत् १८२५ स्व स्थाने नगर सिंहुड़ो ''
६. महाकाली सहस्रनाम - ''इति कालिका कुल सर्व वेद श्री ईश्वर परशराम संवादे संवत् १६२२ '' पुस्तक पूर्ण है , ४० पत्र हैं ।
७. काली पटल '' इति श्री रूद्र जामले कथितं संवत् १६२२ पोथी लली झारखड़िया की '' पुस्तक पूर्ण है , १७ पत्र हैं ।
८. भामिनी विलास - ''शान्तरसस्तरंगः पंडित राज जगन्नाथ कृत पोथी लली झारखड़िया की श्व पठनार्थ '' संवत् १६१६, पूर्ण ३६ पत्र हैं ।

अपने देश में संस्कृत शिक्षा का प्रधान केन्द्र काशी रहा है । विवेचनाधीन परिवार को श्री काशीराज राजबहादुर श्री नृप चेतसिंह देव की ओर से जो दानपत्र प्रदान किया गया है उसमें सेवढा निवासी झारखड़िया पं.श्री गरए को 'वेदमूर्त' सम्मान से अभिहीत किया गया है । काशी नरेश द्वारा दिया गया यह सम्मान सेवढा जनपद की समस्त मेधा का सम्मान है ।

दानपत्र निम्नवत है ।

।। श्री ।।

'' स्वस्ति श्री मन्य महाराजाधिराज श्री काशीराज राजबहादुर नृप चेतसिंह देव के सरकार सै दानपत्र कर दीना वेदमूर्त पं.श्री झारखड़िया गरए को श्री ठाकुर विहारी जू के भोग को कस्वा मौ के चबूतरा में रोज आना चार ।) कौ सो तुम हमेशा पाये जे

**विभागाध्यक्ष, संस्कृत, शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया

हो पुस्तानपुस्त जा रोज सौं कोउ हमारा संतान बा जिसकी तरफ जन होइ सो कोई मुजाम न होइगा बास्तैं भोग के कर दीना है सो तुम हमेशा भोग लगाउत रहौ और सरकार कौ आशीर्बाद हमेशा देत रहौ जा बोल प्रमान सनद हमेशा पली जै है हिंदू बा मुसलमान जो धर्म ईसुर षुदा के मैं ग्यान हूं है सो मुजामिन हू है कातिक सुदी १५ संवत् १८४८ मुकाम मथुरा हुकुम हजूर परवानजी बाबू सुजान सिंघ जी '' पीछे उर्दू में मुहर – दाखिल दफतर मुस्तोफी दाखिल हाल सनद में चबूतरा में रोजाना चार आना मिले हैं । पं. झारखड़िया के यहाँ गीता की दो हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त हुयी हैं , जो अभी तक अप्रकाशित हैं ।

प्रथम प्रति में गीता के संस्कृत श्लोकों का अनुवाद मराठी में किया गया है । इसमें ७० पत्र है । गीता की दूसरी प्रति में संस्कृत श्लोकों का अनुवाद बुन्देली में किया गया है । प्रति के लेखन का समय 'मिती कातिक शुक्ल तिथौ १४ भृगौ संवत् १८६३ लिखा हुआ है । लेखक का नाम श्री कृष्ण है । यह वास्तविक लेखक न होकर लिपि कर्ता है । इस प्रति की पत्र संख्या १३४ है तथा पत्रों का आकार १०'–५' है प्रत्येक पृष्ठ में ८ या १० पंक्तियां है , दोनों ओर लाल स्याही से १ – १ इंच स्थान छोड़कर हांसिया बनाया गया है । हांसिया में ऊपर गी० (गीता) तथा उसके नीचे पत्र संख्या लिखी हुयी है ।

यहाँ काली स्याही का प्रयोग है तथा पत्र संख्या के दोनों ओर लाल स्याही की २–२ लकीरें बनी हुयी हैं । प्रारंभ में गीता पूजन विधि वर्णित है । ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति तथा कीलक के पश्चात करन्यास तथा अंगन्यास का वर्णन है । उसके पश्चात ८ श्लोक ध्यान के हैं । इसके बाद मूल संस्कृत श्लोक है, तत्पश्चात उसका बुन्देली में सरल अनुवाद है।

जैसे –**धर्मक्षेत्रे कुरूक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।**
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ।। १/१

हिन्दी अनुवाद – हे संजय। धर्मभूमि कुरूक्षेत्र में एकत्रित युद्ध की इच्छा वाले मेरे और पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया ?

बुन्देली अनुवाद – राजा धृतराष्ट्र पूछत है कै हे संजय धर्म क्षेत्र जो है कुरूक्षेत्र ता विषे हमारे पुत्र अरू पाण्डु पुत्र तिनको युद्ध करबे की इच्छा है ते सबरे मिलि करकै कहा करत भये सो हमसौं कहिजे। इस प्रथम श्लोक का अनुबाद बुन्देली की व्यवहार गत विशेषताओं का सशक्त उदाहरण हैं ।

सर्वनाम , कारक चिन्ह , योजक तथा क्रियापद बुन्देली सौष्ठव को लिये हुये हैं । ' कै ' ' जो है ' ' ता विसे ' ' तिनको ' ' ते सबरे ' आदि शब्द परीक्षणीय है । बीच – बीच में उवाच और अर्थ लाल स्याही से लिखे गये है । शैली सरल , सरस और हृदयग्राही है । जैसे –

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आसते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।।
३/६

हिन्दी अनुवाद – जो मूढ बुद्धि मनुष्य समस्त इन्द्रियों को हठपूर्वक ऊपर से रोककर मन से उन इन्द्रियों के विषयों का चिन्तन करता रहता है वह मिथ्याचारी अर्थात् दम्भी कहा जाता है ।

बुन्देली अनुवाद – तातैं हे अर्जुन कर्म इन्द्रिय जो हैं बानी कौ आदि करकै पॉच हैं तिनकौं तौ रोकै अरू मन विषै इंद्रियन के विषय कौ ध्यान लावे सो वह कपटी है वाकौ ग्यान कच्चौ है ।

इस श्लोक के अनुवाद में 'तातै' 'जै हैं' 'बान कौ' 'करकै' 'तिनको' एवं 'बाकौ ग्यान कच्चौ है' जैसे व्यवहार इस बोली के हृदयग्राही रूप हैं । दुरूह एवं क्लिष्ट शब्दों का अर्थ सीधी – साध ारण एवं साधारण भाषा में कर दिया है जो आसानी से जन सामान्य की समझ में आ जाता है ।

विद्या विनय सम्पन्ने, ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च, पण्डिताः समदर्शिनः।।
५/१८

हिन्दी अनुवाद – वे ज्ञानी जन विद्या और विनय से युक्त ब्राह्मण में , गौ , हाथी , कुत्ते और चाण्डाल में भी समदर्शी ही होते हैं ।

बुन्देली अनुवाद – तातें हे – अर्जुन जे पंडित हैं कौन कै जिनकी दृष्टि विद्या युक्त ब्राह्मण विषै अरू जैसी दृष्टि गौ विषैं अरू जैसी दृष्टि हस्ती विषैं अरू जैसी स्वान चांडाल विषैं ते बड़े ज्ञानी हैं। इस श्लोक में 'तातैं हे अर्जुन जे पंडित हैं' पदांश में जो बात 'जे' संकेत वाची विशेषण के द्वारा उठायी गयी है वह बात वाक्य में 'कौन' प्रश्न वाचक चिन्ह द्वारा विस्तृत की गयी है और योजक चिन्ह 'कै' के द्वारा व्याख्या को विस्तार प्रदान किया गया है ।

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ अर्थात गागर में सागर बाली सूक्ति निम्न श्लोक में सार्थक है ।

ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णाति यस्तं वेद स वेदवित्।।
१५/१

हिन्दी अनुवाद – आदि पुरूष परमेश्वर रूप मूल वाले और ब्रह्मा रूप मुख्य शाखा वाले जिस संसार रूपी पीपल के वृक्ष को अविनाशी कहते हैं तथा वेद जिसके पत्ते हैं उस संसार रूप वृक्ष को जो पुरूष मूल सहित ततव से जानता है वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला है ।

बुन्देली अनुवाद – ऊपर कौ जर डारैं तरै अरू वेद जाके पत्र हैं ऐसे अश्वत्थ वृक्ष कौ जो जानत सो वेद कौ जानत। इस श्लोक का 'ऊपर कौ जर डारै' जैसा अर्थग्राही अनुवाद अन्य बोलियों में दुर्लभ है। कुछ अन्य श्लोकों का अनुवाद भी पठनीय है–

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।
९/२२

हिन्दी अनुवाद – जो अनन्य प्रेमी भक्तजन मुझे निरन्तर चिन्तन करते हुये निष्काम भाव से भजते हैं उन पुरूषों का योगक्षेम मैं स्वयं वहन करता हूँ ।

बुन्देली अनुवाद – जो कोऊ सबकी आसा छांड़ कै केवल मोकौं भजत हैं , तिनकौं मैं योग मार्ग देत हौं।

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकं स्मृतम्।।
१७/२०

हिन्दी अनुवाद – दान देना ही कर्तव्य है ऐसे भाव से जो दान देश , काल और पात्र के प्राप्त होने पर उपकार न करने बाले के प्रति किया जाता है वह दान सात्विक कहा गया है ।

बुन्देली अनुवाद – दान करै विगर उपकारै पात्र ब्राह्मण कौ देषि कै देश काल कौ देषि कै सो सात्विक तप जानौ ।

काम्यानां कर्मणां न्यासं , सन्यासं कवयो विदुः ।

सर्व कर्म फल त्यागं , प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः।। १८/२

हिन्दी अनुवाद – कितने ही पंडित जन तो काम्य कर्मों के त्याग को सन्यास समझते हैं तथा दूसरे विचार कुशल पुरूष सब कर्मो के फल के त्याग को त्याग कहते हैं।

बुन्देली अनुवाद – कामना रहित जे कर्म हैं तिनकौ त्याग करै सो सन्यास जानौ कर्म फल कौ त्याग करै सो त्याग है पंडित कहत हैं। गीता इस क्षेत्र के लिये रामचरित मानस के बाद सर्वाधिक पूज्य ग्रन्थ रहा है । सर्वाधिक हस्त लिखित प्रतियां दतिया जनपद में रामचरित मानस और उसके विभिन्न काण्डों की उपलब्ध हुयीं हैं । रामचरित मानस के पश्चात् उपलब्ध हस्त लिखित प्रतियों में गीता का ही स्थान है ं कभी – कभी तो ऐसा भी हुआ है कि अनुसंध ानाधीन प्रत्येक वस्ते में दो – दो , तीन – तीन हस्त लिखित प्रतियां तक गीता की उपलब्ध हुयी हैं । यदि रामचरित मानस की अर्धालियां इस जनपद के जनजीवन को व्यवस्थित गृहस्थी चलानें में बल प्रदान करतीं रही हैं तो गीता कहीं न कहीं उनकी आत्मा को संस्कार देती रही है और संस्कार देने वाले इस ग्रन्थ रत्न का दतिया जनपद की बोली में उपलब्ध अनुवाद पृथक से विश्लेषण की अपेक्षा रखता है। इस प्रति के व्याकरणिक स्वरूप को विश्लेषित किया जाना आवश्यक है । संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, कारक चिन्ह और क्रियापदों की जिस प्रकार वाक्य गठन में अपनी महत्ता होती है उसी प्रकार इन संस्कार देने वाले ग्रन्थों के अनुवाद में भी इन समस्त अवयवों का महत्व और भी बड़ा होता है । ऐसे ग्रन्थों में प्रत्येक संबोधन प्रभावकारी होता है । सर्वनाम प्रेरणा लेकर आता है और क्रियापद कुछ न कुछ सोचने को विवश करता है।
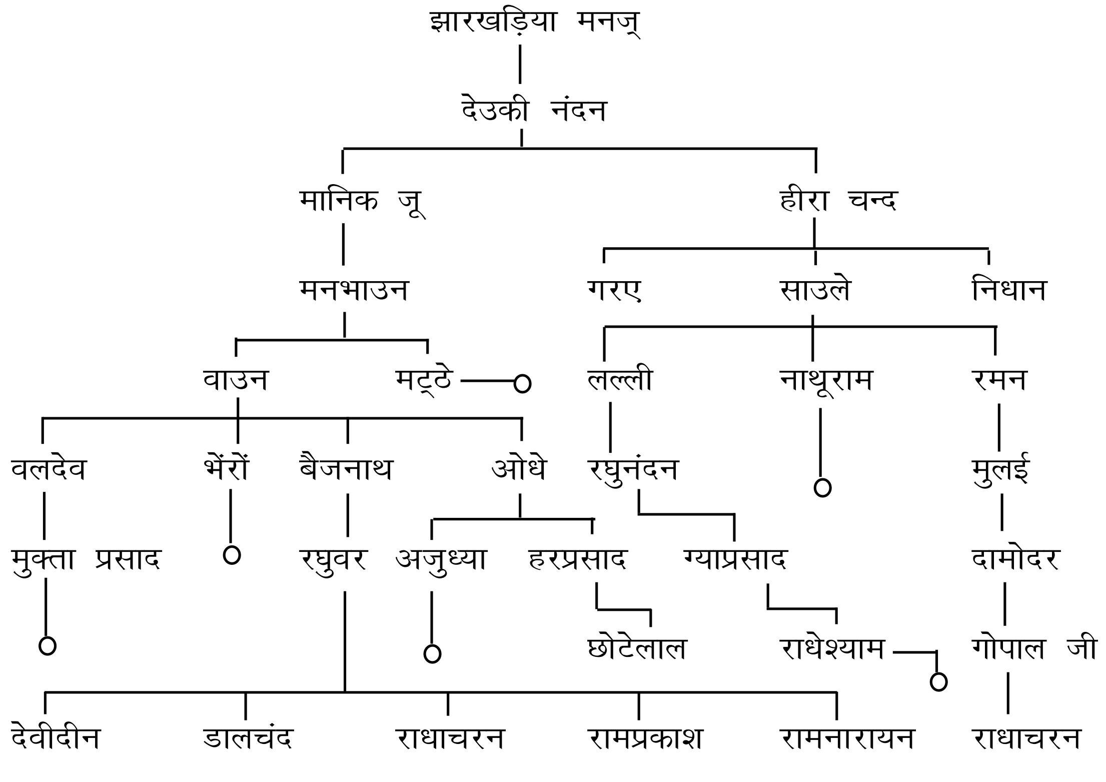
वंशवृक्ष